International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 200-202

चार्वाक और जैन दर्शन में निरीश्वरवाद का स्वरूप

डॉ. शारदा वंदना
दर्शनशास्त्र विभाग, रांची विश्वविद्यालय, रांची, झारखंड, भारत।

प्रस्तावना

निरीश्वरवाद वह सिद्धांत है जो जगत की सृष्टि करने वाले, इसका संचालन और नियंत्रण करनेवाले किसी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं करता। निरीश्वरवाद के अनुसार जगत स्वयं संचालित और स्वयं शासित है। ईश्वरवादी ईश्वर के अस्तित्व के लिए जो प्रमाण देते हैं, निरीश्वरवादी उनकी आलोचना करके उनको काट देते हैं और संसारगत दोषों को बताकर तर्कों से यह सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं कि ऐसे संसार को रचनेवाला ईश्वर नहीं हो सकता। असल में निरीश्वरवाद ईश्वरवाद का विरोधी सिद्धांत है जो ईश्वर संबंधी सभी विश्वासों को अस्वीकृत करता है। कभी-कभी निरीश्वरवाद को अज्ञेयवाद, संशयवाद, प्रकृतिवाद, प्रत्यक्षवाद, मानवतावाद जैसे दार्शनिक सिद्धांतों के परिप्रेक्ष्य देखा जाता है। परंतु ऐसे तमाम दार्शनिक सिद्धांत से निरीश्वरवाद भिन्न सिद्धांत है। निरीश्वरवादी ईश्वर के अस्तित्व को अस्वीकार करता है जबकि अज्ञेयवादी ईश्वर के विषय में सिर्फ अपनी अनभिज्ञता को व्यक्त करता है।'' ठीक उसी प्रकार संशयवाद तथा निरीश्वरवाद में भी भिन्नता है, क्योंकि सत्ता में विश्वास को अस्वीकार नहीं करता बल्कि ईश्वर की सत्ता के संबंध में होने वाले ज्ञान पर संदेह करता है। फिर भी इतना कहा जा सकता है कि अज्ञेयवाद, संशयवाद आदि जैसे सिद्धांत की तार्किक परिणति निरीश्वरवाद ही हो सकता है। इन सिद्धांतों से निरीश्वरवाद की पूर्णतः समानता न होने के बावजूद इनमें विरोध भी नहीं है, बल्कि एक अनिवार्य संबंध है।"[1]

इधर, चार्वाक और जैन अपने ज्ञानमीमांसा में यह स्थापना करते हैं कि इन्द्रिय-प्रत्यक्ष के आधार ही हम किसी वस्तु को जान सकते हैं। अपने इस स्थापना के आधार पर वे आगे बढ़ते हैं और अपने-अपने ढ़ंग से निरीश्वरवाद की स्थापना करते हैं, जिसका अवलोकन करना ही इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है।

चार्वाक का निरीश्वरवाद

भारतीय दर्शन में चार्वाक ही एकमात्र ऐसा दर्शन है जो शुद्ध भौतिकवादी है और अन्य आध्यात्मिक विचार यथा ईश्वर, शरीर से भिन्न अभौतिक आत्मा, परलौक, पुनर्जन्म, कर्मवाद, पाप-पुण्य, स्वर्ग-नरक, मोक्ष या निवाण जैसे सिद्धांतों का निषेध करता है। उपरोक्त सभी सिद्धांतों का खंडन चार्वाक अपनी प्रत्यक्षमूलक, अनुभववादी यथा यथार्थवादी ज्ञानमीमांसा के आधार पर ही करते हैं।

भारतीय दर्शन में ईश्वरवादियों, विशेषकर नैयायिकों, योग दर्शन के महर्षि पंतजलि एवं रामनुज ने ईश्वर की सत्ता को स्थापित करने के लिए तर्क प्रस्तुत किये हैं उनमें प्रस्तुति की भिन्नता अवश्य है परंतु तर्क का मूलाधार एक ही है, जो निम्न है-

1. कारणाश्रित तर्क
2. प्रयोजनमूलक तर्क
3. नैतिक तर्क
4. श्रुतियों की आप्तता पर आधारित तर्क

चार्वाक ने उपरोक्त सभी तर्कों का खंडन इस प्रकार किया है-

1. **कारणाश्रित तर्क**

ईश्वर की सत्ता का प्रमाण देते हुए ईश्वरवादियों ने अनुमान प्रमाण का सहारा लेते हुए कहा कि यह विश्व एक कार्य है, प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। अतः विश्व का कारण है और वह कारण ईश्वर है। उदयनाचार्य ने इसे और भी स्पष्ट करते हुए लिखा है कि यह विश्व सावयव है, क्योंकि यह असंख्य परमाणुओं से बना है। प्रत्येक सावयव पदार्थ का कोई निर्माणकर्ता होता है। अतः विश्व का भी कोई निर्माण कर है और वही ईश्वर है।"[2] पुनः ईश्वरवादी कहते हैं कि कारण-कार्य श्रृंखला पर विचार करते हुए एक स्थान पर हम पहुंचते हैं, जहां यह मानना पड़ता है कि अंतिम कारण कोई हो जो अकारण है क्योंकि अगर ऐसा नहीं माना जाय तो कारणता संबंध अनवस्था दोष से ग्रस्ति हो जायेगा। यह अंतिम कारण ईश्वर ही हो सकता है।

ईश्वरवादियों के उपरोक्त तर्क में दो मुख्य बातें सामने आती है। प्रथमतः ईश्वर की सत्ता का ज्ञान अनुमान प्रमाण द्वारा होता है और दूसरा विश्व के निमित्त कारण के रूप में ईश्वर को स्वीकार करना पड़ता है। चार्वाक उपरोक्त दोनों तर्कों का ढ़ढतापूर्वक खंडन करते हैं- सर्वप्रथम चार्वाक प्रत्यक्षमूलक ज्ञानमीमांसा के आधार पर अनुमान प्रमाण का खंडन करते हैं। अनुमान का मूल आधार 'व्याप्ति'वाक्य' है जिसकी स्थापना साहचर्यता एवं कारण-कार्य (अविनाभाव संबंध) के आधार पर की जाती है। चार्वाक के अनुसार अनुमान को संशय-रहित तभी माना जा सकता है जब व्याप्तिवाक्य संदेहरहित हो, लेकिन व्याप्ति की स्थापना प्रत्यक्ष द्वारा संभव नहीं है क्योंकि भूत, वर्तमान एवं भविष्य के सभी प्रत्यक्षों का ज्ञान हमें नहीं हो सकता। फिर व्याप्ति की सिद्धि अनुमान से भी नहीं मानी जा सकती, क्योंकि अनुमान की सिद्धि तो व्याप्ति-वाक्य से ही होता है। अगर ऐसा माना जाये तो अनवस्था दोष एवं अन्योन्याश्रय दोष उत्पन्न हो जाता है।"[3]

पुनः चार्वाक कारणता सिद्धांत में स्वभाववाद को अपनाते हुए विश्व की उत्पत्ति

का कारण चार भूतों को मानते हैं। इनके मतानानुसार, पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु इन चार महाभूतों के आकस्मिक संयोग से विश्व का निर्माण होता है। विश्व-निर्माण की प्रक्रिया भूतों का स्वभाव है। परंतु यहां मुख्य समस्या यह उठती है कि विश्व में दो तरह के तत्व चेतन और जड़ -देखने को मिलता है। चारों महाभूत जड़ है तो विश्व में चेतनता कैसी आती है? चार्वाक समस्या का हल करने के लिए वृहदारण्यकोपनिषद"[4] के वाक्य का सहारा लेते हैं, जिसके अनुसार जिस प्रकार किण्व आदि से मादक शक्ति उत्पन्न होती है, उसी प्रकार शरीर के रूप में बदल जाने पर इन्हीं भूतों से चैतन्य उत्पन्न होता है।"[5] इस प्रकार चार्वाक ने विश्व के निमित कारण के रूप में ईश्वर की अनिवार्यता को अस्वीकार किया और भूतों को ही उपादान एवं निमित कारण माना।

2. **प्रयोजनमूलक तर्क**

ईश्वरवादियों ने ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए यह तर्क दिया है कि संपूर्ण विश्व में एक व्यवस्था एवं नियमितता देखने को मिलती है, जिससे एक व्यवस्थापक, नियामक की सत्ता सिद्ध होती है। इसलिए ईश्वरवादियों ने ईश्वर को सृष्टिकर्ता, संहारकर्ता माना। इसके विरूद्ध चार्वाक का विचार है कि विश्व में जो व्यवस्था देखने को मिलती है उसका कारण कोई और नहीं बल्कि स्वयं विश्व है।"[6] जिस प्रकार अग्नि की दाहकता, जल की शीतलता उसका स्वभाव है, उसी प्रकार विश्व का स्वभाव है व्यवस्थापना।"[7] अतः संसार को देखकर ईश्वर को मानना भ्रांतिमूलक है।

3. **नैतिक तर्क**

ईश्वरवादी दार्शनिकों ने ईश्वर को नैतिकता के लिए आवश्यक मानते हुए कर्मफलदाता के रूप में स्वीकारा किया है। यद्यपि पाश्चात्य दार्शनिक कांट ने ईश्वर के संबंध में अज्ञेयता को स्वीकारा, परंतु नैतिकता के लिए आवश्यक माना। चार्वाक आत्मा की अमरता, कर्मवाद आदि सिद्धांत को नहीं मानते हैं। इनके इस विश्व में उत्पति और विनाश स्वाभाविक है। इसका कोई प्रयोजन नहीं है। मृत्यु ही मोक्ष है तथा चैतन्य से युक्त ही शरीर ही आत्मा है। अतः पारलौकिक सुख के लिए हर बात के पीछे ईश्वर को घसीटना, ईश्वर को पाने का प्रयत्न करना एक प्रकार का पागलनपन है। इस लोक में प्रसिद्ध व्यक्ति ही ईश्वर हैं।"[8] अतः जीवन जगत के संचालन के लिए ईश्वर विषयक विश्वास का कोई नैतिक आधार नहीं है।"[9] चार्वाक का यह विचार पाश्चात्य भौतिकवादी दार्शनिक, ल्युक्रेशियस से साम्य रखता है। ल्युक्रेशियस ने भी आत्मा की अमरता, पुनर्जन्म के विरूद्ध तर्क दिया कि यदि आत्मा का स्वरूप अनश्वर है और जन्म के समय हमारे शरीर में प्रवेश करती है, तो हमारे मन में पूर्व जन्म के कर्मों की स्मृति के कोई चिन्ह क्यों नहीं है? "[10]

4. **श्रुतियों की आप्तता पर आधारित तर्क**

विश्वास करने योग्य व्यक्तियों, पुस्तकों आदि द्वारा कहे गये वचनों के आधार पर जो ज्ञान हमें प्राप्त होता है उसे आप्तवचन द्वारा प्राप्त ज्ञान कहा जाता है। ईश्वरवादियों का मानना है कि चूंकि वेद, उपनिषद् आदि प्रामाणिक ग्रंथ में और इसमें ईश्वर की सत्ता स्वीकार की गई है, अत: ईश्वर की सत्ता है। ईश्वरवादियों के उपर्युक्त तर्क का चार्वाक प्रत्युत्तर देते हुए सर्वप्रथम ज्ञान के साधन के रूप में शब्द प्रमाण का खंडन करते हैं, फिर वेदों की अप्रामाणिकता सिद्ध करते हैं। इनके अनुसार शब्द प्रमाण को यथार्थ ज्ञान का साधन नहीं माना जा सकता है क्योंकि यह अनुमान पर आधृत है। पुन: एक ही तथ्य के संबंध में विद्वानों का मतैक्य नहीं मिलता, जहां तक वेद की प्रामणिकता एवं ईश्वर-सिद्धि का प्रश्न है तो हम पाते हैं कि वेद ही ईश्वर का साक्ष्य-रचित होने के कारण प्रामणिक माना जाता है और फिर वेद ही ईश्वर का साक्ष्य हो जाता है, जिससे यहां अन्योन्याश्रय दोष उत्पन्न हो जाता है। फिर वेदन विरोधपूर्ण युक्तियों से परिपूर्ण है।"[11] अत: वेद के आधार पर ईश्वर की सत्ता स्वीकार नहीं किया जा सकता। प्रो सिन्हा लिखते हैं कि यदि ईश्वर के अस्तित्व को श्रुति के आधार पर मान लिया जाय तो मानव की बौद्धिकता तथा स्वतंत्र चिंतन को गहरा धक्का लगता है। इसलिए यह प्रयास निरर्थक प्रतीत होता है। इस प्रकार चार्वाक ने ईश्वरवादियों द्वारा ईश्वर की सिद्धि में प्रयुक्त तर्क का जोरदार खंडन किया और पूर्णत: भौतिकवादी बनकर निरीश्वरवाद की स्थापना करते हैं।"[12]

जैन का निरीश्वरवाद

जैन दर्शन ईश्वरदवाद का खंडन करता है। ईश्वर का ज्ञान प्रत्यक्ष के द्वारा असंभव है। ईश्वर का ज्ञान हमें युक्तियों द्वारा मिलता है। ईश्वर की सत्ता का खंडन करने के लिए जैन उन युक्तियों की त्रुटियों की ओर संकेत करना आवश्यक समझता है, जो ईश्वर की सत्ता को प्रमाणित करने के लिए दिये गये हैं। यदि यह कहा जाय कि संसार सावयव होने के कारण कार्य है, तो यह विचार निराधार है। नैयायिकों ने स्वयं आकाश को सावयव होने के बावजूद भी कार्य नहीं माना है। इसके विपरीत वे आकाश को नित्य मानते हैं। इसके अलावा यदि ईश्वर को विश्व का कर्ता माना जाय तो दूसरी कठिनाई का सामाना करना पडता है। किसी कार्य के संबंध में हम पाते हैं कि उसका निर्माता बिना शरीर का कार्य करता है। उदाहरण के लिए कुम्भ्कार बिना शरीर के घडे का नहीं बना सकता। ईश्वर को अवयहीन माना जाता है। अत: वह जगत् की सृष्टि नहीं कर सकता है।"[13]

यदि ईश्वर जगत का स्रष्टा है, तो प्रश्न उठता है कि वह किस प्रयोजन से विश्व का निर्माण करता है? साधारणत: चेतन प्राणी जो कुछ भी करता है वह स्वार्थ से प्रेरित होकर करता है या दूसरों पर करूणा के लिए करता है। अत: ईश्वर को भी स्वार्थ या करूणा से प्रेरित होना चाहिए। ईश्वर स्वार्थ से प्रेरित होकर सृष्टि नहीं कर सकता क्योंकि वह पूर्ण है। उसका स्वार्थ नहीं है। उसकी कोई भी इच्छा अतृप्त नहीं है। इसके विपरीत यह भी नहीं माना जा सकता कि करूणा से प्रभावित होकर ईश्वर ने संसार का निर्माण किया है क्योंकि सृष्टि के पूर्व करूणा का भाव उदय हो ही नहीं सकता। करूणा का अर्थ है दूसरों के दु:खों को दूर करने की इच्छा। लेकिन सृष्टि के पूर्व दु:ख का निर्माण मानना असंगत है। इस प्रकार जैन-दर्शन विभिन्न युक्तियों से ईश्वर के अस्तित्व का खंडन करता है। ईश्वर के अस्तित्व की तरह उसके गुणों का भी जैन-दर्शन में खंडन होता है। ईश्वर को एक सर्वशक्तिमान, नित्य और पूर्ण कहा गया है। ईश्वर सर्वशक्तिमान कहा जाता है क्योंकि वह समस्त विषयों का मूल कारण है। ईश्वर को इसलिए सर्वशक्तिमान कहना क्योंकि वह सभी वस्तुओं का मूल कारण है भ्रामक है, क्योंकि विश्व में

अनेक ऐसे पदार्थ हैं, जिनका निर्माता वह नहीं है। ईश्वर को एक माना जाता है। इसके संबंध में यह तर्क दी जाती है कि उनके ईश्वरों को मानने से विश्व में सामंजस्य का अभाव होगा क्योंकि उनके उद्देश्य से विरोध होगा। लेकिन यह तर्क समीचीन नहीं है। यदि कई शिल्पकारों के सहयोग से एक महल का निर्माण होता है, तो कई ईश्वरों के सहयोग से एक विश्व का निर्माण क्यों नहीं हो सकता है? "[14]

इस प्रकार जैन धर्म ईश्वर का निषेध कर निरीश्वरवाद को अपनाता है। जैन धर्म को धर्म के इतिहास में निरीश्वरवाद धर्म के वर्ग में रखा जाता है। जैन धर्म में ईश्वर के स्थान पर तीर्थंकरों को माना गया है। ये मुक्त होते हैं। इनमें अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति, अनंत सुख निवास करते हैं। जैन धर्म में पंचपरमेष्ठि को माना गया है। अर्हत् सिद्धांत, आचार्य, उपाध्याय और साधु जैनों के पंचपरमेष्ठि है। तीर्थंकरों और जैनियों के बीच निकटता का संबंध है। वे इनकी आराधना करते हैं। तीर्थंकरों के प्रति भक्ति का प्रदर्शन करते हैं। जैन लोग महत्माओं की पूजा बडी धूमधाम से करते हैं। वे उनकी मूत्तियां बनाकर पूजते हैं। पूजा, प्रार्थना, श्रद्धा और भक्ति में जैनों का अकाटय विश्वास है। इस प्रकार जैन धर्म में तीर्थंकरों को ईश्वर के रूप में माना गया है। यद्यपि वे ईश्वर नहीं हैं फिर भी उनमें ईश्वर निहित है। जीवों को उपासक माना गया है तथा ध्यान , पूजा, प्रार्थना ,श्रद्धा, भक्ति को उपासना का तत्व माना गया है। प्रत्येक जैन का यह विश्वास है कि तीर्थंकर के बताये गये मार्ग पर चलकर प्रत्येक व्यक्ति मोक्ष को अपना सकता है। इस प्रकार जैन धर्म आशावाद से ओत-प्रोत है।"[15]

जैन धर्म को धर्म कहलाने का एक दूसरा भी कारण है। जैन धर्म मूल्यों में विश्वास करते हैं। जैन धर्म में पंचमहाव्रत की मीमांसा हुई है। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रम्हचर्य, अपरिग्रह ये जैनों के पंचमहाव्रत हैं। प्रत्येक जैन इन व्रतों का पालन सतर्कता से करते हैं। वे सम्यक् चरित्र पर अत्यधिक जोर देते हैं। मूल्यों की प्रधानता देने के कारण जैन धर्म को धर्म की कोटि में रखा जाता है। सबसे बडी बात तो यह है कि इन नैतिक मूल्यों के नियंत्रण के लिए जैन लोग तीर्थंकर में विश्वास करते हैं। इससे प्रमाणित होता है कि तीर्थंकरों का जैन धर्म में आदरणीय स्थान है। ईश्वर के लिए जो गुण आवश्यक है वे तीर्थंकर में ही माने गये हैं। तीर्थंकर ही जैन धर्म के ईश्वर हैं। "[16]

निष्कर्ष

चार्वाक और जैन दोनों ही इंद्रिय-प्रत्यक्ष को ज्ञान का साधन मानते हैं तथा अनुमेय सत्ता का खंडन करते हैं। दोनों प्रत्यक्ष सिद्धांत के आधार कारण-कार्य की सार्वभौमता एवं अनिवार्यता का खंडन करते हैं, लेकिन चार्वाक स्वभाववाद को प्रतिपादित करते हैं। चार्वाक प्रत्यक्ष को ज्ञान का साधन मानते हैं लेकिन प्रत्यक्ष से होने वाले ज्ञान की प्रक्रिया का विश्लेषण नहीं करते। इस आधार पर चार्वाक के संबंध में यह कहना कोई अतिश्योक्ति न होगा कि जिन सत्यों का प्रतिपादन आधुनिक पाश्चात्य अनुभववान, तार्किक भाववाद और तार्किक अणुवाद करते हैं, उनका बीज चार्वाक दर्शन में मिलता है। इसके अलावा चार्वाक इंद्रिय-प्रत्यक्ष के आधार पर ईश्वरवाद का खंडन करते हुए भौतिकवादी हो जाते हैं। भारतीय दर्शन में चार्वाक जिस प्रकार ईश्वरवाद का खंडन कर भौतिकवाद की स्थापना करते हैं वह प्रत्यक्षवाद का तार्किक परिणति हो सकता है? इन तथ्यों पर विचार करते समय हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि चार्वाक के द्वारा किये गये ईश्वरवाद के खंडन का उद्देश्य तथाकथित धर्म और उसके ईश्वरीय सत्ता में विश्वास का खंडन करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. माध्वाचार्य; सर्व दर्शन संग्रह, पृ.4-5
2. उदयनाचार्य; न्याय कुसुमांजलि, 5,1
3. दासगुप्ता, हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉस्फी, भाग,3 पृ. 524-4
4. भारतीय दर्शन - डॉ सिंह बीएन-डॉ सिंह आशा
5. भारतीय दर्शन की रूपरेखा-प्रो सिन्हा, हरेंद्र प्रसाद
6. चार्वाक दर्शन की शास्त्रीय समीक्षा- डॉ पाठक सर्वानंद
7. चार्वाक दर्शन की समीक्षा- पृ. 223
8. विस्तृत चर्चा के लिए देखे माध्वाचार्य, सर्वदर्शन संग्रह, अनुवाद-प्रो उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी पृ-9-17
9. वही पृ-18
10. वर्मा, वेद प्रकाश, उपरोक्त, पृ-367
11. भारतीय तत्व चिंतन-डॉ जैन, जगदीशचंद्र
12. आचार्य उमास्वाति, तत्वार्थ सूत्र
13. कर्मवाद- युवाचार्य (वर्तमान आचार्य) महाप्रज्ञ, पृ.137
14. आचार्य महाप्रज्ञ, जीव-अजीव, पृ.22
15. वही, पृ-18
16. अजित जैन 'जलज' अर्हत वचन, जनवरी-मार्च, 2004, पृ-49